हिना : ध्यान और नृत्य का जीवन

हिना, बन संन्यासिन!

ओशो की सुंदर आंखों से झरते प्रेम को जब पहली बार हिना ने अपने हृदय में संजोया, तब हिना मात्र सात बरस की नन्ही गुड़िया थी। अपनी मम्मी—मा जया के साथ मुंबई में उन्हें ओशो के प्रथम दर्शन हुए। बाद में मा के साथ ही अक्सर वह पूना कम्यून जाया करती और वहां पर ओशो के प्रवचनों को सीधा बैठकर बहुत ध्यान से सुना करती थीं। ओशो को सुनना, देखना उन्हें बहुत अच्छा लगता था।

हिना थीं एक शांत, अल्पभाषी और शर्मिले स्वभाव की लड़की। बचपन से ही शास्त्रीय नृत्य का अभ्यास करना—उनका खास, प्रिय शौक हुआ करता था। मां के लाड़-दुलार, प्यार और सुरक्षा भरे आंचल में पली-बढ़ीं, वह अपनी दुनिया में मस्त थीं। यह साधारण मां-बेटी का संबंध नहीं था। समय के साथ-साथ गहरे तलों पर यह संबंध निर्मित होता गया। इन दोनों के बीच एकात्मता का धागा अनुस्यूत था, जो आज भी विद्यमान है।

जब हिना *18* वर्ष की हुई तो माता-पिता ने उसकी पसंद से, उनके विवाह का संयोजन किया। लेकिन अस्तित्व को कुछ और ही मंजूर था।

ओशो कहते हैं; "तुम अस्तित्व को किसी भी चीज़ के लिए बाध्य नहीं कर सकते। तुमने बीज बो दिए हैं। तुम बगीचे को सींच रहे हो। अब प्रतीक्षा करो।"

उस समय उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण घटना घटी। इस घटना को मा जया ने लिखकर ओशो के पास प्रश्नरूप में भेजा। तब ओशो के अमृत प्रवचन संत रैदास पर 'मन ही पूजा, मन ही धूप' शीर्षक से चल रहे थे। दूसरे दिन के प्रवचन में, इस प्रश्न को ओशो लेते हैं।

'भगवान, दशहरे के दिन मेरी बेटी की शादी तय हुई थी। सब तैयारियां हो चुकी थीं, कार्ड बांट दिये गये थे और लड़के ने तीन

दिन पहले दूसरी लड़की से शादी कर ली। मैंने तो इस दुर्भाग्य के पीछे सौभाग्य को ही देखा, मगर मेरी बेटी के लिए इसमें कौन-सा रहस्य छिपा है? हिना के लिए आपका क्या संदेश है?'

ओशो कहते हैं :- "जया अच्छा ही हुआ। दुर्भाग्य में सौभाग्य छिपा है, ऐसा नहीं; दुर्भाग्य कहीं है ही नहीं, सौभाग्य ही सौभाग्य हैं। जो शादी के पहले भाग गया, वह शादी के बाद कितनी देर टिकता? और टिकता भी तो उसके टिकने का क्या अर्थ होता?

"अच्छा हुआ, एकदम अच्छा हुआ। उत्सव मनाओ। उसको भी निमंत्रित कर लेना उत्सव में, क्योंकि उसके बिना यह सौभाग्य हिना का नहीं हो सकता था। जरा भी दुख न लेना। यहां जो भी होता है, सब सुख है। जरा देखने की आंख चाहिए, जरा पैनी आंख चाहिए। और जया, तेरे पास आंख है। और मैंने हिना को भी देखा, उसके पास भी बड़ी संभावना है। शायद संन्यास के बीच जो एक बाधा बन सकती थी, वह हट गयी। शायद यह संन्यास के लिए अवसर बना।" इसके बाद हिना के लिए इसमें छिपे रहस्य को उजागर करते हुए ओशो कहते हैं :- "हिना के संन्यास की घड़ी आ गयी। आती है घड़ी; कुछ लोगों के लिए—विवाह की लंबी यातनाएं सहने के बाद। सौभाग्यशाली है, इसको बिना यातना सहे आ गयी।

विवाह ही करना हो तो परमात्मा से करो। जुड़ना ही है तो उससे जुड़ो। फेरे ही लेने हैं तो उसके साथ। गांठ ही बांधनी है तो उससे।" इस प्रवचन की अंतिम पंक्ति में ओशो हिना को संदेश देते हैं :-

"हिना, बन संन्यासिन! सीख ध्यान और फिर उठने दे प्रेम को।" उसी शाम हिना ने ओशो से संन्यास ले लिया।

कुछ समय बाद ध्यान शिविर में हिस्सा लेने के लिए वह पूना कम्यून पहुंचीं। बुद्धा हॉल में पूरी समग्रता से ध्यान में उतरी। ध्यान शिविर के अंत में ओशो के आशीष दर्शन के लिए वह शाम को अंतरंग महफिल में साधकों के समूह के साथ गयीं। वहां आंख बंद किए बैठी थीं कि मा गरिमो ने पास आकर ओशो का संदेश दिया, 'हिना, नाचो।'

उत्सवमय वातावरण, प्यारा संगीत, ओशो की मौजूदगी का जादू...बस हिना उठीं और नृत्य करने लगीं। शरीर, मन, प्राण लयबद्ध हो थिरकने लगे। आनंद ही आनंद। प्राणों में समाया अहोभाव...कुछ क्षणों के लिए जैसे नाच ही नाच बचा था। ओशो ने सिर पर हाथ रखकर आशीष दिये। इस मुलाकात में जाने ऐसा क्या घटा कि हिना की खिलखिलाहट की पंखुरियां खुलती चली गयीं। बिना बात भीतर से हंसी फूटने लगती और वह हंसती रहती। बेबूझ हंसी का यह सिलसिला एक पखवाड़े तक चला।

दूसरे दिन के लिए संदेश था कि घुंघरू पहनकर नृत्य करना है। तो दूसरी शाम पांव में घुंघरू बांधकर हिना ने ओशो की मौजूदगी में नृत्य किया। साथ में एक अन्य संन्यासिन भी थी। हिना बताती हैं कि यह नृत्य मेरे भीतर की खिलावट का उत्सव था। मैं बुद्धक्षेत्र की ऊर्जा में आनंद मग्न थी। यहां अपने जीवन के क्षण-क्षण को—उसकी समग्रता में जीने का अहसास हो रहा था। कुछ दिनों बाद हिना मुंबई लौटीं और फिर वापस कम्यून में रहने चली गयीं। यहां उन्हें कार्य ध्यान मिला—"बुद्धा हॉल में संन्यासियों को नृत्य सिखाओ और टूर गाइड बनो।"

यहां उनके जीने का ढंग सौ प्रतिशत बदल गया था। उनके अंतस में निहित सृजन को विकसित होने के लिए यहां उचित वातावरण मिला। उचित खाद-पानी, रोशनी मिली। तत्पश्चात् रजनीशपुरम् में भी वह चार साल रहीं। वहां रहकर किये गये अथक श्रम कौशल ने उनका आगे का जीवन संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। जैसा कि ओशो का कथन है—"मेरी सारी शिक्षाओं का सार संक्षेप इतना ही है; नृत्य सीखो, गीत सीखो, आनंद सीखो, बांटना सीखो, जीना सीखो। भगोड़े मत बनो। पलायनवादी मत बनो।"

हिना ने जीवन को भरपूर जीया है। वह पलायनवादी नहीं बनीं। दस साल जर्मनी में रहीं। जर्मन भाषा सीखी और नौकरी की। कुछ समय बाद अपनी 'ट्रेवल एजेंसी' का व्यवसाय आरंभ किया, जो काफी सफल रहा। खूब मेहनत की उन्होंने। खूब पैसा कमाया। छः-सात साल तक यह सब चला। फिर एक दिन सारा व्यवसाय समेट दिया और उसे ठीक दामों में बेचकर वापस हिंदुस्तान लौट आयीं। इसका कारण हिना बताती हैं—'क्योंकि

मेरा भाई गंभीर रूप से बीमार हो गया था। मुझे लगा कि जीवन कितना अनिश्चित है। कमा-कमाकर भी क्या होगा? मैं पूना वापिस लौट आयी। मैं अपने भाई के साथ ज्यादा से ज्यादा समय व्यतीत करना चाहती थी।'

ओशो से अपना कनैक्शन हिना को सदा महसूस होता है। 'हिना नाचो।' निर्ध्वनि की असीम तरंगें उन्हें आज भी उत्प्रेरित करती हैं। नृत्य से उन्हें प्रेम है। नृत्य उनके लिए ध्यान है। नृत्य उनकी साधना है।

'बरसते मेघों के नीचे नाचते हुए मोर देखे? वही उत्सव है। ऐसे ही मैं भी तुम्हें नाचते हुए देखना चाहूंगा।' उत्सव आमार जाति, आनंद आमार गोत्र में ओशो इन अमृत वचनों को कहते हैं। हिना इसे सुनकर सहमति में झुक जाती हैं—"Yes Osho, yes"